वर्मी कम्पोस्ट क्यों

1. भूमि का सुधार।
2. भूमि की जल धारण क्षमता बढ़ाता है।
3. उत्पादन में 20–30 प्रतिशत वृद्धि ।
4. कीटों/बीमारियों के प्रकोप में कमी
5. दाने बड़े चमकदार एवं स्वादिष्ट।
6. खेती में टिकाऊपन।
7. उत्पादित अनाज, फल एवं सब्जियाँ स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी ।
8. भूमि में सूक्ष्म जीवाणुओं की वृद्धि।
9. फल और फूल पौधों में अधिक लगते है।
10. पौधे स्वस्थ्य और गहरे हरे रंग के होते है।
11. खेती स्वालम्बी होती है।

वर्मीकम्पोस्ट में उपलब्ध पोषक तत्व –

पोषक तत्व	वर्मीकम्पोस्ट	गोबर की खाद
नाइट्रोजन %	2.5–3.5	0.5–1.5
फास्फोरस %	0.5–2.0	0.5–0.9
पोटश %	1.5–2.0	1.5–1.4

आर्थिक विश्लेषण –

वर्मी कम्पोस्ट के उत्पादन से कृषक दो प्रकार से लाभान्वित हो सकते है।

1. प्रत्यक्ष लाभ
2. अप्रत्यक्ष लाभ

प्रत्यक्ष लाभ – 250 किलो कचरा, 250किलो गोबर, 5 किलो केंचुआ, 300 किलो खाद,एवं 8 किलो केंचुआ 300 किलो खाद न्यूनतम मूल्य 7 रू. प्रति किलो की दर से रू. 2100
3 किलो केंचुआ 500 रूपये किलोग्राम की दर से मूल्य 1500 रू. कुल रू. 3600

इस प्रकार दो माह में रूपये 3000/– के केंचुऐं से 3600 रू. का लाभ कमाया जा सकता है तथा तीन हजार पूंजी के केंचुए कृषक के पास उपलब्ध रहेगे। इस प्रकार वर्ष भर में कुल लाभ रू. 3600 X 6 = 21600

ज्ञान के उन्नति की राह पर

अतीत के सहारे उन्नति (प्रगति) समृध्द भविष्य

पहल हमारी आपका साथ

गाँव की समृध्दि का करें रास्ता साफ

हमारे कदम आपकी ओर

आपके कदम समृध्दि की ओर

हम केंचुओं के लिये,

केंचुए हमारे लिये

एकलव्य विश्वविद्यालय

02 Days Workshop

Workshop on solid Waste Management & Vermicomposting

-:Jointly Organized By:-

School of Basic and Applied Sciences

Eklavya University, Damoh (M.P)

And

Ojaswini College Par Excellence, Damoh (M.P)

Maharaja Chhatrasal Bundelkhand University ,Chhatarpur (M.P)

On 29th & 30th September

Time : 11:00 to 5:00 PM

Venue

Day 1 :- Ojaswini College Par Excellence ,Damoh

Day 2 :- Krishi Vigyan Kendra, Sagar Road, Damoh

वर्मी कम्पोस्ट
(केंचुआ खाद)

वर्मीकम्पोस्ट, वर्मीकल्चर क्या है ?

केंचुओं को वर्म्स, और उनके समूह को वर्मीकल्चर कहते है। केंचुऐ के गोबर को वर्मी कम्पोस्ट कहते है।

विशिष्ट प्रजाति के केंचुए –

आइसेनिया फेटिडा, यूड्रीलस यूजीनिया आदि विशिष्ट प्रजाति के केंचुऐ मिट्टी की ऊपरी सतह पर रहकर जीवाश कचरे को ज्यादा मात्रा में खाते है। तथा उनका रूपातर मिट्टी में महत्वपूर्ण घटक ह्मस में करते है जो कि पेड़ पौधो के लिये अत्यंत लाभकारी है।

विशिष्ट प्रजाति के केंचुयें –

वर्मीकल्चर अर्थात् केंचुओं का पालन, किसी भी उथले (एक डेढ़ फीट) गमले, लकड़ी के खोके, ट्रे तथा प्लास्टिक के टब में किया जा सकता है। जहाँ लगभग 200 केंचुऐ पाले जा सकते है।

– सभी केंचुऐ नीचे चले जायेगें तब फिर ऊपर का खाद तथा अंडे एकत्रित करें।

– सूखी खाद उपयोग हेतु तैयार करें।

– केंचुऐ पुनः उपयोग करें।

सामग्री जो आपको एकत्रित करना है

1. लकड़ी का खोका 1.75' लं, 1.75' चौड़ी तथा 2' गहराई।
2. बगीचे तथा रसोईघर का जैविक कचरा।
3. केंचुयें।

वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने की विधि –

छठवीं तह बोरा
पाँचवीं तह 6 इंच से 8 इंच रसोई घर, बगीचे का कचरा तथा गोबर
चौथी तह केंचुऐं
तीसरी तह 2 इंच से 3 इंच गोबर/वर्मीकम्पोस्ट।
दूसरी तह 2.5 इंच से 3 इंच सूखी पत्ती, घास/भूसा
पहली तह– मिट्टी

वर्मीकम्पोस्ट बनाने की विधि –

– खोके या ट्रे में सर्वप्रथम मिट्टी की तह बिछाएँ 2 इंच से 3 इंच।
– सूखा घास, पत्ती, भूसा या बगीचे का कचरा बिछाये 2 से 3 इंच
– गोबर बिछाएँ 2 से 3 इंच
– 200 से 250 केंचुऐ फैलायें
– रसोईघर का कचरा, बगीचे का कचरा तथा गोबर मिलाकर बिछाये 6 से 8 इंच।
– बोरे से ढँक दे।
– नमी के लिये बोरे को गीला रखें।
– रोज थोड़ा पानी छिड़के तथा ऐसे ही छोड़ दे ।
– 7 दिन के बाद रसाईघर का कचरा ,सब्जी तथा फलों के छिलके, बचा हुआ खाना आदि रोज डालें तथा पुनः बोरे से ढक कर पानी छिड़क कर रख दे।

वर्मीकम्पोस्ट बनने की अवधि –

– पहली बार वर्मी कम्पोस्ट तैयार होने में ढाई से तीन माह लगते है।
– तीन से चार सप्ताह बाद जब वर्मीकम्पोस्ट तैयार हो जाये तब तीन चार दिन तक कचरा तथा पानी डालना बन्द कर दें।
– एक पौलीथीन अथवा कागज पर ढेर के रूप में तीन–चार घंटे तक छोड़ दें।